कोयल के अण्डे, कौओं के घोंसले और बहुत कुछ

संकेत राउत



मादा एशियन कोयल। फोटो - प्रवीण कवळे

मार्च से जून के दौरान आप कोयल (Asian koel) के मधुर संगीत को भरपूर सुन पाते होंगे। वैसे कोयल एक और वजह से भी मशहूर है। आपको पता ही होगा कि कोयल अपने अण्डे देने के लिए अन्य पक्षियों के घोंसलों को निशाना बनाती है। उनमें से एक है कौआ जिसे 'हाउस क्रो' कहा जाता है। एक बार कौए के घोंसले में अण्डे देने के बाद, कोयल के अण्डे सेने से लेकर चूज़ों की परवरिश तक, सब कुछ कौआ करता है। अपने बच्चों की परवरिश के लिए किसी अन्य प्रजाति पर निर्भर रहने के इस बर्ताव को जीव-जगत में परजीवी व्यवहार (parasitic behaviour) या घोंसला परजीविता (brood parasitism) कहा जाता है। परजीवी प्रजाति अपने बच्चों की परवरिश हेतु जिस प्रजाति पर निर्भर रहती है, उस प्रजाति को मेज़बान प्रजाति कहा जाता है। कोयल एक परजीवी प्रजाति है जिसकी मेज़बानी कौआ करता है। चूँकि मेज़बान इतनी सेवाएँ देने के

लिए तत्पर रहता है, इस वजह से अपने बच्चों के लिए परजीवी पक्षी का उत्तरदायित्व अण्डे देने के साथ ही खत्म हो जाता है।

कई बार कोयल को घोंसला न बनाने की वजह से आलसी भी कहा जाता है। लेकिन क्या वाकई कोयल को आलसी कहना चाहिए? कोयल के इस व्यवहार पर ऐसे कई बुनियादी सवाल *संदर्भ* के अंक-156 (जनवरी-फरवरी, 2025) में प्रकाशित लेख 'कौओं के घोंसले और कोयल के अण्डे' और 'कौआ और कोयल: संघर्ष या सहयोग' में उठाए गए थे। उनमें से कुछ के जवाब उन लेखों में देने की कोशिश भी की गई थी। हालाँकि, कुछ के जवाब बच गए थे जिन पर मैं इस लेख में चर्चा करने की कोशिश कर रहा हूँ। इस लेख में कोयल के साथ-साथ पहाड़ी कोयल (common cuckoo) का सन्दर्भ भी लिया गया है जो सर्दी के मौसम के दौरान यूरोप से भारत आती है। (आम तौर पर इसे पहाड़ी कोयल कहा जाता है लेकिन यह भारत के सभी इलाकों में देखी जा सकती है।) यह पक्षी भी घोंसला परजीवी है और इस पर भी काफी अध्ययन किया जा चुका है। इस लेख की शुरुआत हम कुकू के कुल (Cuculidae) की जानकारी से करते हैं।

सभी कुकू कुल परजीवी नहीं

दुनियाभर में कुकू की कुल 150 प्रजातियाँ पाई जाती हैं जिनमें से लगभग 22 प्रजातियाँ भारत में पाई जाती हैं। इनमें से एक प्रजाति कोयल है। कोयल घोंसला परजीवी है, यह बात हम जानते हैं लेकिन सभी कुकू प्रजातियाँ परजीवी नहीं होतीं। भारत में पाया जाने वाला भारद्वाज (coucal) भी कुकू कुल में शुमार है लेकिन यह प्रजाति घोंसला परजीवी नहीं है। दूसरी तरफ, यह भी समझने की ज़रूरत है कि पक्षियों में सिर्फ कुकू प्रजाति ही घोंसला परजीवी नहीं होती। दुनियाभर में लगभग 234 पक्षी प्रजातियाँ घोंसला परजीवी हैं। कुकू के साथ-साथ फिंच, हनीगाइड और बतख की एक प्रजाति (black-headed duck) भी इन परजीवियों की सूची में शामिल हैं।

कोयल के मेज़बान

हमने देखा है कि घोंसला परजीवी प्रजाति अपने बच्चों की परवरिश के लिए मेज़बान प्रजाति पर निर्भर रहती है। भारत में कोयल के लिए वो जाना-पहचाना मेज़बान कौआ है। लेकिन दुनियाभर के विभिन्न परजीवी पक्षी अपने बच्चों की परवरिश के लिए अलग-अलग प्रजातियों पर निर्भर होते हैं। वैसे परिस्थिति के अनुसार, एक परजीवी प्रजाति के लिए एक से ज़्यादा मेज़बान प्रजातियाँ भी हो सकती हैं। भारत में कोयल अपने बच्चों की परवरिश के लिए ज़्यादातर कौओं (house crow) को चुनती हैं



फोटो - प्रवीण कक्कड़

चित्र-1: घरू कौआ *(house crow)*

लेकिन कभी-कभार जंगली कौओं (large-billed crow) को भी मेज़बान के तौर पर चुन लिया जाता है। इन तीनों प्रजातियों का प्रजनन काल मार्च से जून तक का होता है और मेज़बान प्रजाति चुनने का यह एक प्रमुख आधार बनता है।

कोयल भारत के बाहर भी पाई जाती हैं और मज़ेदार बात यह है कि भारतीय उपमहाद्वीप की विभिन्न जगहों पर कोयल के मेज़बान भी फर्क होते हैं। बांग्लादेश में कोयल अपने मेज़बान के तौर पर कजला लटोरा (long-tailed shrike) को सबसे ज़्यादा चुनती है। इस क्रम में मैना (common myna) दूसरे पायदान पर है और कौआ वहाँ तीसरी पसन्द बन जाता है। श्रीलंका में देखा गया है कि सन् 1880 के पहले तक कोयल जंगली कौए को मेज़बान के तौर पर चुनती थी लेकिन अब हाउस क्रो पर निर्भर है। मलय द्वीप समूह में कोयल पहले कौओं पर निर्भर हुआ करती थी लेकिन अब मैना को मेज़बानी के ज़्यादा मौके देती है! इसका मतलब यह हुआ कि परजीवी पक्षी हालात के मुताबिक मेज़बान प्रजाति के चयन में बदलाव भी कर सकते हैं। इसका एक अर्थ यह भी लगाया जा सकता है कि भारत में कोयल अपने बच्चों की परवरिश के लिए कौओं पर ज़्यादा निर्भर हैं। लेकिन आने वाले समय में हो सकता है कि कौओं की संख्या में कमी होने के कारण या किसी अन्य कारण से भी, कोयल मेज़बान के तौर पर किसी अन्य प्रजाति को चुनें।

कुछ अध्ययनों द्वारा शोधकर्ताओं को यह ज्ञात हुआ है कि कुकू कुल में घोंसला परजीविता का व्यवहार पहले से मौजूद नहीं था। यानी कुछ प्रजातियों में जैव-विकास के दौरान परजीविता का रास्ता विकसित हुआ है।



फोटो - प्रवीण कवळे

चित्र-2: *जंगली कौआ (large-billed crow)*

घोंसला परजीविता के नुकसान

जून के महिने में जब कोयल के बच्चे वयस्क अवस्था की दहलीज़ पर होते हैं तब कई लोगों ने कौए को कोयल के बच्चों पर हमला करते हुए देखा होगा। कौए जैसे मेज़बान अपने पर निर्भर परजीवी प्रजाति के साथ अक्सर आक्रामक व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। मेज़बान पक्षी कई बार परजीवी पक्षी को अण्डे देते वक्त मार भी देता है, या घोंसले में उनके द्वारा रखे गए अण्डों को नष्ट कर देता है। कुछ मेज़बान उनके घोंसले में पल रहे परजीवी चूज़ों को मौत की नींद भी सुला देते है। यहाँ तक कि परजीवी प्रजाति मेज़बान के घोंसले के पास ज़्यादा देर तक मण्डरा भी नहीं सकती। और इसीलिए परजीवी मादा को अण्डे देने का काम जल्द-से-जल्द निपटाना पड़ता है। पहाड़ी कोयल यह काम महज़ 10 से 15 सेकण्ड में पूरा कर देती है।

देखा जाए तो मेज़बान पर निर्भर रहने के काफी नुकसान हैं, फिर भी परजीवी पक्षी इस जोखिम को उठाते हैं क्योंकि परजीविता के कुछ फायदे भी हैं।

घोंसला परजीविता के फायदे

चूज़ों के भरण-पोषण और सुरक्षा में काफी ऊर्जा खर्च होती है। चूँकि परजीवी पक्षी को ये सब नहीं करना पड़ता इसलिए उनकी बहुत सारी ऊर्जा बचती है जिसे वे ज़्यादा अण्डे देने में खर्च करते हैं। एक प्रजनन काल में कौआ तीन से पाँच अण्डे देता है, वहीं पहाड़ी कोयल 12 से 22 अण्डे तक दे सकती है। यानी यदि

कुछ बच्चे मर भी जाते हैं या मेज़बान द्वारा कुछ अण्डे नष्ट कर दिए जाते हैं तो भी ज़्यादा नुकसान नहीं होता और पर्याप्त बच्चे जीवित रह पाते हैं। इस तरह परजीवी पक्षी को फायदा होता हुआ नज़र आता है।

लेकिन परजीवी के बच्चे बड़े करना, मेज़बान के लिए तो नुकसान का ही काम है। तो भला मेज़बान यह नुकसान क्यों उठाते हैं? उन्हें यह करना पड़ता है क्योंकि परजीवी उन्हें ठगते हैं। तो चलिए, एक नज़र हम इस धोखाधड़ी पर भी डालते हैं।

अण्डों-अण्डों में फर्क कितना?

परजीवी पक्षी अपने अण्डे मेज़बान के घोंसले में रखता है इसलिए सवाल यह उठता है कि क्या मेज़बान खुद के और परजीवी के अण्डे के बीच में फर्क नहीं कर पाता? इसके जवाब की तह में जाने के लिए पहले हमें अण्डों के रंग के बारे में जानना होगा। कौए और कोयल के अण्डे दिखने में बहुत कुछ एक-जैसे होते हैं। जैसे धब्बे कौए के अण्डे पर होते हैं वैसे ही धब्बे कोयल के अण्डों पर भी होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि कोयल के अण्डे कौओं के अण्डों की लगभग नकल होते हैं जिसकी वजह से कौआ ठगा जाता है।

लेकिन कोयल के मुकाबले पहाड़ी कोयल का काम ज़्यादा मुश्किल दिखाई देता है क्योंकि उसके मेज़बान और उनके अण्डों के रंग में विविधता है। जैसे एक मेज़बान रीड वार्ब्लर (reed warbler) के अण्डे नीले और दूसरे मेज़बान मिडो पिपिट (meadow pipit) के अण्डे भूरे रंग के होते हैं। लेकिन इनके घोंसलों में रखे इनके खुद के अण्डों और पहाड़ी कोयल द्वारा दिए गए अण्डों के रंग और धब्बे एक-जैसे होते हैं। यह मेज़बान को ठगने के लिए ज़रूरी है। तो क्या पहाड़ी कोयल मेज़बान के अनुसार अपने अण्डों का रंग बदल सकती है?

जी नहीं। पहाड़ी कोयल उसी मेज़बान प्रजाति को अपना निशाना बनाती है जिसके अण्डों का रंग उसके खुद के अण्डों के रंग से मेल खाता हो। अध्ययन में यह पाया गया है कि अलग-अलग मेज़बान को चुनने वाली पहाड़ी कोयल, दरअसल अलग-अलग जाति या नस्ल की होती हैं, यानी एक ही प्रजाति के अन्दर विविधता! शोधकर्ता अल्फ्रेड न्यूटन ने इन नस्लों को गीनेट्स (genets) नाम दिया है। मतलब, अलग-अलग गीनेट्स की पहाड़ी कोयल अलग-अलग मेज़बान के घर में अण्डे देती हैं।

लेकिन यहाँ एक दिक्कत दिखाई देती है। पहाड़ी कोयल के एक से अधिक मेज़बान हैं, तो उसे कैसे पता चलता है कि उसके गीनेट के अनुसार किस मेज़बान के अण्डे के साथ उसके अण्डों का रंग मिलता-जुलता होगा? इस पर खोज जारी है लेकिन कुछ पक्षी-विशेषज्ञ मानते हैं कि जिस



फोटो - सुशान्त पवार

चित्र-3: *पहाड़ी कोयल*

मेज़बान प्रजाति ने मादा कोयल का भरण-पोषण किया था, उस प्रजाति की याद मादा कोयल को वयस्क अवस्था में भी बनी रहती होगी और आगे चलकर उसी मेज़बान प्रजाति को मादा कोयल मेज़बान बनाती होगी। यानी जो मादा कोयल रीड वार्ब्लर के घोंसले में पली-बढ़ी होगी, वह रीड वार्ब्लर को ही मेज़बान बनाएगी।

आपके मन में शायद यह सवाल भी उठ सकता है कि अण्डों के रंग निर्धारण में नर कोयल की भी कोई भूमिका होती है या नहीं? यदि मादा के साथ मिलन करने वाला नर अलग गीनेट का हो तो क्या उसका असर अण्डे के रंग पर भी पड़ेगा? विविध अध्ययनों से यह पता चलता है कि पहाड़ी कोयल में अण्डे के रंग निर्धारित करने वाले जीन्स सिर्फ मादा के पास होते हैं। इसका मतलब है कि मादा का मिलन किसी भी गीनेट के नर के साथ हो, अण्डों का रंग मादा के गीनेट का ही रहेगा। मादा किसी भी गीनेट के नर के साथ मिलन कर सकती है, और बाद में वह अपनी याददाश्त के ज़रिए सही मेज़बान के घोंसले तक पहुँच जाती है।

मेज़बान का चुनाव

अगर आपको लगता है कि मेज़बान का घोंसला चुनकर, उसमें अण्डा देना आसान काम है तो आप गलत हैं क्योंकि मेज़बान कई दफा घोंसला परजीवी के साथ आक्रामक

व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। शिकारी पक्षी के शरीर पर बने पैटर्न (plumage mimicry) की वजह से कुछ परजीवी पक्षियों को काफी हद तक सुरक्षा मिलती है। लेकिन हर बार यह सुरक्षा की गारंटी नहीं है। इसलिए मेज़बान घोंसलों में अण्डे रखने का काम चुपचाप और जल्दी से करना पड़ता है।

संदर्भ अंक-154 (सितम्बर-अक्टूबर, 2024) में प्रकाशित लेख 'पक्षियों की मिमिक्री' में हमने यह जाना था कि शिकारी पक्षियों का पैटर्न कैसे कोयल को झाड़ियों के बीच छुपने में मददगार साबित होता है। मादा कोयल छुपकर मेज़बान और उसके घोंसले पर पैनी नज़र रखती है और सही समय आते ही जल्दी-से अण्डे देकर उड़ जाती है। लेकिन कोयल को अण्डे देने के लिए सही घोंसला और सही वक्त चुनना पड़ता है।

कोयल को अण्डे उसी घोंसले में देने होते हैं जहाँ पहले से मेज़बान के अण्डे मौजूद हों। आम तौर पर संख्या से इसका कोई सम्बन्ध नहीं होता लेकिन यदि मेज़बान ने अण्डे देना शुरू नहीं किया हो तो वह अपने घोंसले में दिए गए अन्य पक्षियों के अण्डे नष्ट कर देता है। इसलिए जिस घोंसले में अण्डे पहले से मौजूद हों, कोयल वहीं अपने अण्डे देती है। घोंसले में अण्डों की संख्या कम-ज़्यादा होने से मेज़बान को शायद फर्क नहीं पड़ता।

मेज़बान के घोंसले में यदि कोयल के चूज़े, मेज़बान के चूज़ों से पहले जन्म ले लेते हैं तो इस स्थिति में कोयल के चूज़ों के ज़िन्दा रहने की सम्भावना बढ़ जाती है। मेज़बान के चूज़ों की हलचल से कोयल के अण्डे नष्ट हो सकते हैं या घोंसले में पहले से चूज़ों के होने की वजह से कोयल के अण्डे को मेज़बान अनदेखा कर सकता है। अक्सर देखा जाता है कि देर से पैदा होने वाले चूज़े खाने की होड़ में अपने भाई-बन्धुओं से पिछड़कर, भूख से मारे जाते हैं। इसलिए कोयल को अण्डे देने के लिए सही समय चुनना बेहद ज़रूरी होता है ताकि मेज़बान के चूज़ों से पहले, कोयल के चूज़े अण्डों से बाहर निकल आएँ।

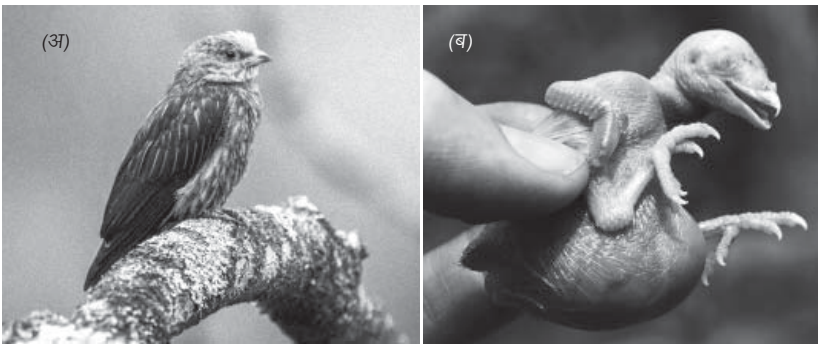
लेकिन जल्दी अण्डे देने में भी एक दिक्कत है। पहाड़ी कोयल जैसे परजीवी उन पक्षी प्रजातियों में शामिल हैं जिनके अण्डे में भ्रूण का विकास अण्डे के पेट में होने के समय ही शुरू हो जाता है। इस प्रक्रिया को इंटरनल इंक्यूबेशन कहा जाता है। यह प्रक्रिया जिन पक्षियों में होती है, उनके अण्डों से चूज़ों को बाहर आने में कम समय लगता है। लेकिन यदि ये अण्डे समय रहते घोंसलों में न रखे जाएँ तो अण्डे के भीतर पनप रहे भ्रूण के विकास पर विपरीत असर पड़ सकता है। इसके अलावा, पक्षी अपने सभी अण्डे देने के बाद ही उन्हें सेना शुरू करते हैं। यदि वे ऐसा नहीं

करेंगे तो चूज़े एक ही समय पर अण्डों से बाहर नहीं आएँगे। अक्सर एक दिन के अन्तर में सभी चूज़े अण्डों से बाहर आ जाते हैं। कोयल को यह पूरा हिसाब लगाकर मेज़बान के घोंसले में अण्डे देने पड़ते हैं ताकि अण्डे देने के बाद मेज़बान द्वारा सेने की प्रक्रिया में ज़्यादा समय न लगे।

विभिन्न तरह के चूज़े

मैं यहाँ पहाड़ी कोयल जैसे परजीवी के चूज़ों की दिल दहला देने वाली एक बात साझा करना चाहता हूँ। ये चूज़े जन्म के तुरन्त बाद कोहराम मचा देते हैं। आम तौर पर सटीक समय पर अण्डे देने और इंटरनल इंक्यूबेशन की वजह से कोयल के चूज़े मेज़बान के चूज़ों से पहले जन्म लेते हैं। जन्म के तुरन्त बाद ये चूज़े घोंसले में बचे अण्डे और अन्य चूज़ों को घोंसले से बाहर गिराकर, कत्ल-ए-आम मचा देते हैं। इस तरह मेज़बान द्वारा लाया गया सारा भोजन पहाड़ी कोयल के चूज़ों को मिल जाता है और वे तेज़ी-से बड़े हो जाते हैं।

लेकिन ऐसा भी नहीं है कि परजीवी पक्षियों में ऐसा बर्ताव सिर्फ कुकू कुल के पक्षी ही करते हों। भारत के हिमालय क्षेत्र में पाई जाने वाली हनीगाइड (yellow-rumped honey-guide) का आकार कुल जमा गौरया (house sparrow) जितना होता है। हनीगाइड भी घोंसला परजीवी है और इसके मेज़बान ग्रीन-बैक्ड टिट्स (*Parus monticolus*) और ग्रेट बार्बेट्स (*Psilopogon virens*) हैं। हनीगाइड के चूज़ों की चोंच पर जन्म के समय नुकीले हुक जैसी संरचना होती है। हनीगाइड के चूज़े इसका इस्तेमाल घोंसले में मौजूद अण्डे नष्ट करने और अन्य चूज़ों को नोचकर मारने के लिए करते हैं। हर मौसम में मेज़बान के न जाने कितने अण्डे और चूज़े परजीवी चूज़ों के हमले के शिकार बनते हैं। दूसरी ओर, कौए के घोंसले



चित्र-4: *(अ) हनीगाइड; (ब) हनीगाइड के चूज़े की चोंच पर नुकीली संरचना*



चित्र-5: *ग्रेट बार्बेट*

चित्र-6: *ग्रीन-बैक्ड टिट*



में एशियन कोयल के एक से ज़्यादा बच्चे भी पल-बढ़ सकते हैं। पहाड़ी कोयल के चूज़ों की तरह, एशियन कोयल के चूज़ों को घोंसले से अण्डों और चूज़ों को बाहर फेंकते हुए नहीं देखा गया है। एशियन कोयल के चूज़े ऐसा क्यों करते हैं, इसके बारे में बस अन्दाज़ा ही लगाया जा सकता है।

पहाड़ी कोयल के मेज़बान रीड वार्ब्लर के घोंसले का आकार छोटा होता है। इसलिए परजीवी चूज़ों के लिए मेज़बान के अण्डे और चूज़े घोंसले से बाहर फेंकना थोड़ा आसान होता है। कौए का घोंसला तुलनात्मक रूप से बड़ा और गहरा होता है जिसमें से अण्डे व चूज़ों को बाहर फेंकना मुमकिन नहीं हो पाता। छोटे आकार के वार्ब्लर के लिए शायद एक ही बच्चे का भरण-पोषण कर पाना मुमकिन होता होगा। दूसरी ओर, सर्वभक्षी और बड़े आकार के कौए के लिए शायद एक से ज़्यादा बच्चों की परवरिश करना सम्भव हो पाता होगा।

बेगिंग कॉल की नकल

परवरिश के दौरान मेज़बान नर-मादा चूज़ों को लगातार भोजन लाकर खिलाते हैं। इस समय चूज़े आवाज़ निकालकर नर-मादा पंछी का ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। आम तौर पर इसे 'बेगिंग कॉल' कहते हैं। ऐसा घोंसला जिसमें मेज़बान और परजीवी,

दोनों चूज़े मौजूद हों, वहाँ परजीवी चूज़े मेज़बान के चूज़ों की बेगिंग कॉल की नकल करते हैं। इस तरह बेगिंग कॉल की मदद से परजीवी ज़्यादा-से-ज़्यादा खाना हासिल करने में सफल हो जाते हैं और काफी तेज़ी-से वृद्धि करते हैं। इस प्रक्रिया में अन्य चूज़े कुपोषण के कारण मर भी सकते हैं।

कौओं की घटती संख्या

कई लोगों के मन में यह सवाल उठता है कि क्या घोंसला परजीविता की वजह से मेज़बान कौओं की संख्या कम होने का खतरा है या कौओं की संख्या कम हो रही है?

वैसे सरसरी तौर पर देखा जाए तो ऐसा नहीं है। अभी तक हमने देखा कि घोंसला परजीविता के बाद भी मेहमान और मेज़बान, दोनों के बच्चे बड़े हो जाते हैं। दरअसल, कौओं की संख्या में कमी का एक प्रमुख कारण मुझे रिहाईश का संकट (habitat loss) लगता है। जलवायु परिवर्तन, भोजन की उपलब्धता, कीटनाशकों का बढ़ता इस्तेमाल भी इसके सम्भव कारण हैं। यहाँ इस बात पर विचार करना भी उचित होगा कि घोंसला परजीविता तो सैंकड़ों बरस से चली आ रही है, उसके बावजूद मेज़बान की संख्या लगातार बनी हुई है और परजीवी पक्षी की संख्या में भी कोई बड़ा इज़ाफा नहीं हुआ है।

अन्त में, मैं बस इतना कहना चाहूँगा कि आलसी व परजीवी जैसे लेबल मनुष्य के लिए ही ठीक हैं। जैव-विकास की प्रक्रिया के दौरान कई प्रजातियों में अपने अस्तित्व को

संदर्भ के अंक-156 में प्रकाशित लेख (कौआ और कोयल: संघर्ष या सहयोग) में स्पेन में हुए शोधकार्य का सन्दर्भ देते हुए लेखक कालू राम शर्माजी ने यह बताया था कि जब 'ग्रेट स्पॉटेड कुकू' के बच्चे मेज़बान कैरिअन क्रो के घोंसले में पलते हैं तो कैसे मेज़बान को भी फायदा प्राप्त होता है। इस शोध के मुताबिक, परजीवी ग्रेट स्पॉटेड कुकू के बच्चे एक खास तरह की गन्ध छोड़ते हैं जो शिकारियों को दूर रखती है, और उसका फायदा कैरिअन क्रो को भी मिलता है। हालाँकि, यह कुछ दुर्लभ मामलों में से एक है। अक्सर, परजीवी के बच्चे मेज़बान के अण्डों और बच्चों को घोंसले से बाहर गिरा देते हैं, या उनका भोजन लेकर उन्हें भूखा मार देते हैं।

सामान्यतः, परजीवी प्रजनन (brood parasitism) मेज़बान प्रजातियों के लिए बिलकुल भी फायदेमन्द नहीं होता है। यहाँ परजीवी पक्षी जैसे कोयल बिना किसी मेहनत के अपनी अगली पीढ़ी पाल लेती है, जबकि मेज़बान पक्षी को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है। मेज़बान पक्षी अपनी पूरी ऊर्जा और संसाधन एक ऐसे बच्चे को पालने में लगा देता है जो उसका अपना नहीं है, जिससे उसकी अपनी वंश वृद्धि रुक जाती है।

बनाए रखने के लिए विविध रणनीतियाँ और व्यवहार विकसित होते हैं। इसलिए जब हम इन्सानी सोच के लिहाज़ से किसी जीव को चतुर, मूर्ख, आलसी, चपल, क्रूर, दयालू जैसे लेबल लगाकर देखने की कोशिश करते हैं तो वह उचित नहीं है। उस व्यवहार या रणनीति का इन लेबल से कोई लेना-देना नहीं होता है।

मेज़बान के चूज़ों को मारने की वजह से हम कोयल को खलनायक की तरह देख सकते हैं, लेकिन जैव-विकास में यह सामान्य है। कई सारी पक्षी प्रजातियों में ज़िन्दा रहने के लिए चूज़े अपने ही सगे भाई-बहन को मारने से भी गुरेज़ नहीं करते। आखिरकार, यह जद्दोजहद अपना वंश आगे ले जाने एवं बढ़ाने के लिए है जिसे डार्विन ने अपने जैव-विकास के सिद्धान्त से समझाने की कोशिश की। मैं तो यही मानता हूँ कि कोयल का घोंसला परजीविता का रास्ता बेहद रोचक और सफल उदाहरण है।

संकेत राउत: वन्यजीव प्रेमी हैं तथा वन्यजीव अध्ययनों में भाग लेते रहते हैं। पक्षी और तितलियाँ रुचि के मुख्य क्षेत्र हैं। जंगली जानवरों के बारे में पढ़ने में और उनके व्यवहार का विश्लेषण करने में आनन्द आता है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हैं और शिक्षक प्रशिक्षण का कार्य करते हैं।

घोंसला परजीविता विषय पर *संदर्भ* में प्रकाशित अन्य लेख पढ़िए- कौओं के घोंसले और कोयल के अण्डे (अंक-156, जनवरी-फरवरी, 2025), कौआ और कोयल: संघर्ष या सहयोग (अंक-156, जनवरी-फरवरी, 2025), तुम सम्भालो मेरे बच्चों को (अंक-161, नवम्बर-दिसम्बर, 2025)।

इस लेख के लिए रेफ्रन्सिज़:

https://en.m.wikipedia.org/wiki/Cuckoo
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Brood_parasitism
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Asian_koel
https://binocularbase.com/cuckoo-life-cycle/
https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S000334721300016X
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Yellow-rumped_honeyguide
https://en.m.wikipedia.org/wiki/Common_cuckoo
https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC1690908/
https://ornithology.com/common-cuckoo/
https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S000334721300016X
https://www.datocms-assets.com/44232/1632764065-host-list-honeyguide-16sep2020-revised.pdf
https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S096098220701010X